Subject :- Sociology Date :- 05/05/2020
Class :- D - II (Subsidiary)
Topic : - लिंग विभेद के सम्बन्ध में नारीवादी विचारधारा
By : - Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga

Online Study Material No :- (68)

यौन / लिंग विभेद के सम्बन्ध में नारीवादी विचारधारा की विवेचना करें?

प्रत्येक समाज में यौन / लिंग विभेद रहा है। चाहे पितृसत्तात्मक समाज हो या मातृसत्तात्मक प्रत्येक समाज में लिंगों के आधार पर स्त्री - पुरुष के कार्यों, दायित्वों और उनके प्रति दृष्टिकोण में अन्तर पाया जाता है। पितृसत्तात्मक परिवार में पुरुषों की प्रधानता होती है जबकि स्त्रियों का अवमूल्यन होता है। भारतीय समाज में नारी का जन्म ही अपने में अभिशाप माना जाता है। यद्यपि इसका कारण यौन की भिन्नता नहीं है बल्कि दहेज प्रथा का प्रचलन अर्थात् एक सांस्कृतिक कारक है। पुत्र को मुक्तिदाता, बुढ़ापे का सहारा और घर की पूँजी समझा जाता है, किंतु पुत्री का जन्म एक दायित्व और कर्ज समझा जाता है। इसलिए जन्म से ही लिंग-भेद-भाव शुरु हो जाता है।

K. M. Panikkar के अनुसार हिन्दु सामाजिक जीवन की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक हिन्दु संयुक्त परिवार में नारी को प्रदान की जाने वाली प्रस्थिति है। आधारभूत रूप से हिन्दु सामाजिक व्यवस्था यह मानकर चलती है कि पुत्री परिवार का अंग नहीं है। वह तो ऐसा आभूषण है जो गिरवी रखा है और जब उसका मालिक आएगा और उसकी माँग करेगा तो उसे दे दिया जाएगा। लिंग भेदभाव यौन पृथक्करण में प्रकट होता है। लड़का - लड़की के वयस्क होते ही उन दोनों का क्षेत्र, खेल, पढ़ाई, संस्कार और जीवन की पूरी तैयारी अलग - अलग हो जाता है। लड़का घर के बाहर की वस्तु मानी जाती है जबकी लड़कियाँ घर की चार दीवारी में कैद रह जाती है।

भारतीय समाज में लड़कियों को पराया धन समझा जाता है और उसपर व्यय करना फिजूल खर्च भी समझा जाता है जबकि लड़को के उपर व्यय करना जरुरत समझा जाता है, और लड़कों के द्वारा पूर्वजों के पिंडदान, वंश को आगे चलाना तथा बुढ़ापे में सहारा देना समझा जाता है। उस पुरुष को 'स्त्रैण' कहा जाता है जो भावुक होता है और उस पुरुष को 'पेटीकोट' का गुलाम कहा जाता है जो अपनी पत्नि से जीवन के मामलो पर सलाह लेता है। चाहे उसकी पत्नि कितनी ही चतुर और व्यवहार कुशल क्यों न हो। यहाँ तक कि शास्त्र भी कहते है कि 'नारियों का चरित्र देवता भी नही जान पाते है मनुष्य बेचारे की क्या बिसात। पुरुष नारी पर सभी प्रकार का अत्याचार करता है और सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी हुई नारी सब कुछ सहन करने को मजबूर हो जाती है जिससे वह पदभ्रष्ट घोषित हो जाती है।

नारीवादी विचारधारा में Sex/Gender विभेद

नारीवादी विचारधारा में प्रकृति से 'Sex' का वही रिश्ता है जो संस्कृति से 'Gender' का है। लिंग और जेन्डर के विभेद का प्रश्न नारीवादी विचारधारा में भी विवाद का एक विषय बना हुआ है। नारीवादी विचारधारा में Sex शब्द, पुरुष और स्त्री के बीच एक जैविक

(Biological) अर्थ की तरफ इशारा करता है जबकी gender का सम्बन्ध उसके साथ गुंथे सांस्कृतिक अर्थो से है। जैविक निर्धारणवाद (Biological determinism) के सिद्धांत के आधार पर सभी तरह के उत्पीड़नो को प्राकृतिक या कुदरती कहकर जायज ठहराया जाता है। यह जैविक निर्धारणवाद ही महिला उत्पीड़न को भी सदियों से वैधता प्रदान करता रहा है। नारीवादी विचारधारा जैविक निर्धारणवाद के सिद्धांत को मानने से इनकार करती है।

मार्गरेट मीड (Margaret Mead) ने अपनी पुस्तक 'Male & Female तथा Sex & Temperament' मे कहा है कि स्त्रियों और पुरूषों के व्यक्तित्व में भिन्नता का कारण यौनकी भिन्नता नही है बल्कि पर्यावरण या संस्कृति की भिन्नता है। क्योंकी दोनो ही भिन्न-भिन्न पर्यावरण में पलते है इसके कारण उनके ~~व्यक्तित्व~~ के गुणों में भी भिन्नता उत्पन्न होती है। इसलिए नारीवादियों के अनुसार स्त्री-पुरुष की शारीरिक या जैविक संरचना और पुरुषत्व एवं नारीत्व के साथ जोड़कर दिखाए जाने वाले लक्षणो के बीच किसी भी तरह का सहसम्बन्ध (Co-~~relation~~ relation) नही है। बचपन से ही gender भेद के आधार पर gender भेद के अनुरुप लड़को और लड़कियों को व्यवहार करने की शिक्षा दी जाती है। अमेरिकनविद्वान H.M. Johnson ने भी कहा है कि "समाजीकरण के तीसरे स्तर में लड़को और लड़कियों पर अपने Sex के अनुरुप व्यवहार करने के लिए सामाजिक दबाव दिया जाता है। यदि लड़के अपने Sex के अनुरुप व्यवहार करते है तो उन्हे पुरस्कृत किया जाता है और ~~यदि~~ लड़कियाँ लड़कियों के Sex के अनुरुप व्यवहार करती है तो समाज में उनकी प्रसंसा होती है।" इससे यह स्पष्ट होता है कि बचपन से ही लड़को और लड़कियों को जेन्डर भेद के अनुरुप व्यवहार करना, कपड़े पहनना, खेलना, हँसना, घूमना आदि सिखाया जाता है। पुरुषों में पौरुष और स्त्रियों में नारित्व का गुण पाये का कोई भी सम्बन्ध यौन की भिन्नता से नही है बल्कि इसका कारण दोनो के समाजीकरण में अन्तर है। इसलिए सिमोंन्द बुआ ने लिखा है कि "औरत पैदा नही होती है, बना दी जाती है।" यदि कोई पुरुष अन्य लोगो के सामने रोकर अपना दुःख व्यक्त करता है तो उसे ताने दिए जाते है कि औरतों की तरह रो रहे हो। अर्थात् रोकर दुःख व्यक्तकरना औरतों का गुण माना जाता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की इस पंक्ति को कि 'खूब लड़ीमर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' लोक भूल चुके हैं अर्थात् कुलमिलाकर बहादुरी का गुण पुरुषों की ही विशेषता कहलाती है फिर भी भले ही कितनी ही और वें बहादुरी का प्रदर्शन करती हैं और कितने ही पुरुष पीठ दिखाकर भाग खड़े होते हैं।

नारीवादियो का कहना है कि समाज में Sex के आधार पर श्रम विभाजन किया जाता है कि लिंग के आधार पर श्रम विभाजन मे 'प्राकृतिक' कुछ नही है। श्रम विभाजन का कोई भी सम्बन्ध जैविक संरचना से नही है। केवल गर्भधारण की प्रक्रिया ही प्राकृतिक है जो वास्तविक है। इस कार्य को पुरुष नही कर सकते। इसके अलावा खाना बनाना, घर की

Scanned with CamScanner

सफाई करना, बर्तन साफ करना, कपड़ा साफ करना, बच्चों की देखभाल करना आदि कार्य जिसे घरेलू कार्य की संज्ञा दी जाती है, पुरुष भी उतनी ही दक्षता के साथ कर सकते है जितनी दक्षता के साथ औरतें करती है। किंतु इन कार्यों को औरतों का कार्य कहा जाता है। लिंग के आधार पर श्रम विभाजन वेतन भोगी कामो के सार्वजनिक दायरे तक भी फैला हुआ है एवं इसका भी कोई सम्बन्ध Sex से नहीं है बल्कि यह मात्र gender (संस्कृति) पर आधारित है। नर्सिंग होम, अध्यापन (विशेषकर निचले स्तरों पर) आदि मुख्य रुप से औरतों के कार्य माने जाते है और उन्हे अपेक्षाकृत कम वेतन दिया जाता है। नारीवादी विचारकों का मत है कि अध्यापन और नर्सिंग जैसे कार्यों का महिलाकरण इसलिए कर दिया गया है क्योंकी इन कार्यों को मोटे तौर पर उनके द्वारा घर के भीतर किए जाने वाले कार्यों के ही विस्तार के रुप में देखा जाता है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर श्रम विभाजन के पीछे कोई प्राकृतिक या जैविक असमानताएँ नहीं है बल्कि इसकी जड़ में कुछ क्रियात्मक मान्यताएँ है। यही कारण है कि एक औरतों को शारीरिक रुप से कमजोर और भारी शारीरिक श्रम के लिए अनुपयुक्त माना जाता है और दूसरी तरफ मध्यम या निम्नवर्गीय परिवारों में उसे घर के भीतर और बाहर सबसे भारी कार्य सौंप दिया जाता है जैसे पानी ढोना, जलावन के बड़े-बड़े गट्ठर ढोना, चक्की मे अनाज पीसना, धान की रोपनी करना, खदानों और निर्माण कार्यों में ईंट को सिर पर ढोना आदि। किंतु जब औरतों द्वारा किए जाने वाले कार्यों का मशीनीकरण हो जाता है जिससे वे काम आसान भी हो जाते हैं एवं उनके लिए पारिश्रमिक भी बढ़ जाता है तब उस नयी मशीनरी का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण पुरुषों को दिया जाता है और औरतें हाशिये पर ढकेल दी जाती है।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि औरतों की वर्तमान अधीनता, अपरिवर्तनीय जैविक असमानताओं के कारण उत्पन्न नहीं होती है बल्कि यह ऐसे सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों, विचारधाराओं और संस्थाओं की देन है जो महिलाओं की वैचारिक तथा भौतिक अधीनता को सुनिश्चित करती है। इसलिए नारीवादी विचारक लिंग भेद पर आधारित श्रम विभाजन, उससे भी ज्यादा आधारभूत स्तर पर, यौनिकता और प्रजनन के प्रश्न को एक ऐसे विषय के रुप में देखती है जिसे 'जैविक संरचना' (Biological Structure) जो प्राकृतिक और इसलिए अपरिवर्तनशील मानी जाती है के दायरे से बाहर रखकर देखा जाना चाहिए। नारीवादी एजेन्डा इन मुद्दों को 'राजनीतिक' दायरे में स्थापित करने का है जो संकेत करता है कि उन्हे बदला जा सकता है और बदला जाना चाहिए।

Sex/Gender विभेद पर नारीवादी सोच में नए विकास

सेक्स और जेन्डर के बीच भेद करने के तरीके को लेकर नारीवादी विचारकों के बीच

Scanned with CamScanner

4

मतभेद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि Sex का सम्बन्ध प्रकृति से है और gender का सम्बन्ध संस्कृति से है। मोटे तौर पर नारीवादी सिद्धांत के अन्तर्गत Sex और Gender विभेद का जिस प्रकार विकास हुआ है, उसमे चार विचारधाराऐं दृष्टिगोचर होती हैं जो निम्नांकित हैं:-

(A) पहली विचारधारा के समर्थकों का मानना है कि Sex और gender एक दूसरे के साथ द्वन्द्वात्मक और अविभाज्य रूप से सम्बन्धित हैं। इस विचारधारा के समर्थकों में एलिसन जैगर उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। इनके अनुसार नारीवादियों द्वारा प्रारंभ में जो वैचारिक परिभाषा दी गयी वह एक खास बिन्दु के बाद टिक नहीं पाती है। इनका कहना है कि मानवीय हस्तक्षेप बाहरी वातावरण को परिवर्तित करता है, साथ ही बाहरी वातावरण में होने वाले परिवर्तनों से मानव शरीर में परिवर्तन और उसका स्वरूप निर्धारित होता है। जैविक बनावट और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों की इस समझ को यदि हम Sex & Gender विभेद पर लागू करें तो निष्कर्ष यही निकलता है कि महिलाओं के शरीर की बनावट भी सामाजिक बन्धनों और सौंदर्य के मानकों द्वारा निर्धारित की गयी है। इस विचारधारा के विचारकों के अनुसार हमें इस तथ्य पर विचार करना चाहिए कि हमारे उपर दो समान रूप से शक्तिशाली कारक प्रभाव डालते हैं - (1) कई अन्तर्सम्बन्धित प्रक्रियाओं के माध्यम से समाज Sex विभेद पैदा करता है और (2) Sex विभेदों के कारण समाज का एक ढाँचा पैदा होता है।

(B) Sex & Gender विभेद में दूसरा मत रेडिकल नारीवादियों का है। यह विचारधारा आगाह करती है कि नारी वादियों को अलग-अलग लिंगों के बीच जीव वैज्ञानिक भेद को कम करके नहीं आँकना चाहिए और सारी असमानताओं को केवल संस्कृति के ही मत्थे थोप देना उचित नहीं है। रेडिकल नारी वादियों का कहना है कि पितृसत्तात्मक सामाजिक मूल्यों ने स्त्रीत्व के गुणों का अवमूल्यन किया है और नारीवाद की यह जिम्मेदारी है कि वह इन गुणों को वापस प्रतिष्ठित करें क्योंकी उनके अनुसार स्त्री और पुरुष में यह असमानता बहुमूल्य है। Sex & Gender पर इनका सोच यह है कि पुरुष और स्त्री के बीच कुछ विशेष असमानताएँ हैं जो उनके भिन्न जैविक प्रजनन क्षमताओं के कारण पैदा होती हैं और इसलिए स्त्रियाँ अधिक संवेदनशील, सहज और प्रकृति के निकट होती हैं।

(C) Sex & Gender विभेद के सम्बन्ध में तिसरी नारीवादी विचारधारा उत्तरआधुनिक नारीवादी विचारधारा के नाम से जानी जाती है। यह नारीवादी विचारधारा रेडिकल के नारीवादी के विपरीत है। जहाँ एक तरफ रेडिकल का मानना है कि Sex & Gender विभेद लिंग भेदों को कम महत्वपूर्ण बना देता है वहीं उत्तर आधुनिक नारीवादियों का एक खेमा मानता है कि यह विभेद जैविक शरीर पर जरुरत से ज्यादा जोर देता है। इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक जडिथ बटलर जैविक (sexed) शरीरों और सांस्कृ-

तिक रूप से निर्मित Genderon के बीच एक तीव्र सम्बन्ध विच्छेद का दृष्टिकोण रखती है।

(D) Sex & Gender विभेद के सम्बन्ध मे एक चौथी अवधारणा जेन्डर को विभिन्न पहचानो- जाति, वर्ग, नस्ल, धर्म आदि मे स्थित करने पर आधारित है। इसका अर्थ होगा 'स्त्री' की जैविक श्रेणी के हित, जीवन परिस्थितियाँ या लक्ष्य साझा हो, ऐसा होना आवश्यक नही है स्त्रियाँ एक पहले से मौजूद समूह (subject) नही है जिन्हे महिला आंदोलन अपने बल-बूते पर सीधे- सीधे संगठित कर सकता हो। इसका अर्थ यह है कि महिलाएँ स्वयं को सिर्फ और यहाँ तक कि सिर्फ प्राथमिक रूप से भी जेन्डर के रूप मे नही देखती है बल्कि श्वेत, अश्वेत, मुस्लिम या दलित या किसान के रूप मे भी देखती है। इसलिए अनेक मामलों में महिलाओ को महिला आंदोलन की तुलना में अन्य आंदोलनों के जरिये कहीं ज्यादा आसानी से संगठित किया जा सकता है। ऐसे उदाहरण के लिए धार्मिक आंदोलनो को लिया जा सकता है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नारीवादियों द्वारा किया गया मूल Sex & Gender विभेद नारीवादी राजनीति के कारण लगातार जटिलतर होता गया है।

S. N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner